

**मा**

नव सभ्यता के विकास से ही महिला समानता का प्रश्न सदैव केंद्र में रहा है। संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 महिलाओं को समानता का अधिकार और भेदभाव से सुरक्षा प्रदान करते हैं। फिर भी प्राचीन काल से आज के डिजिटल युग में दुनिया के प्रवेश करने के बाद भी महिलाओं की स्थिति में बहुत ज्यादा परिवर्तन नहीं आया है। आज भी वे पूरी तरह से आत्मनिर्भर नहीं बन पाई हैं। महिला समानता का अर्थ है, महिलाओं और पुरुषों को समाज में समान अधिकार, अवसर और सम्मान मिलना। यानी शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, राजनीति और सामाजिक जीवन, हर क्षेत्र में महिलाओं को वही अवसर दिए जाएं जो पुरुषों को प्राप्त हैं। महिलाएं इस समानता को हासिल करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रही हैं। कभी शिक्षा, कभी रोजगार, कभी राजनीति और कभी घरेलू जीवन, हर क्षेत्र में महिलाओं ने बराबरी का हक्क मांगा और अपने संघर्षों से उसे हासिल करने की कोशिश की है। यह बात और है कि इसमें अभी तक पूरी तरह से सफलता नहीं मिली है।

महिला समानता दिवस 26 अगस्त पर विशेष

डिजिटल युग में महिला समानता के मायने



Alka 'Soni'
परिचय बांगला

आज समय बदला है। हर चीज बस एक क्लिक की दूरी पर है। सबाल है इस बदले समय में महिला समानता कहाँ है? क्या वह पूरी तरह से मिल पाई है? या आज भी यह डिजिटल क्रांति महिलाओं के लिए एक दिवारबन भर है? यह काफी हद तक सच है कि 20वीं सदी में हुई औद्योगिक क्रांति ने महिलाओं को कामकाजी दुनिया से जोड़ा, तो 21वीं सदी में डिजिटल क्रांति ने उन्हें वैश्विक मंच पर खड़ा किया।

आज इंटरनेट, स्मार्टफोन, अटिंफिशियल इंटीलिजेंस और सोशल मीडिया ने जीवन की परिवास बदल दी है। इसने महिलाओं को नए अवसर दिए, उन्हें रोजगार के लिए ऑनलाइन स्टॉकार्म मिले, लेकिन इस डिजिटल क्रांति ने उनके लिए नए संकट भी खड़े किए हैं।

डिजिटल युग: अवसरों के नए दरवाजे

शिक्षा की पहुंच

सूचना क्रांति के पहले गांवों और छाटे कस्तों की लड़ियों के लिए, उच्च शिक्षा तक पहुंचना मुश्किल था। लेकिन आज उपलब्ध अनिवार्य ऑनलाइन कोर्सेस, डिजिटल लाइब्रेरी और वर्चुअल क्लासरूम ने उनकी यह बाधा तोड़ दी है। अब दिल्ली की ही नहीं, देशवाड़ा की छात्रा भी हार्डवर्ड या आईआईटी के लेक्चर ऑनलाइन देख सकती है।

रोजगार और आत्मनिर्भरता

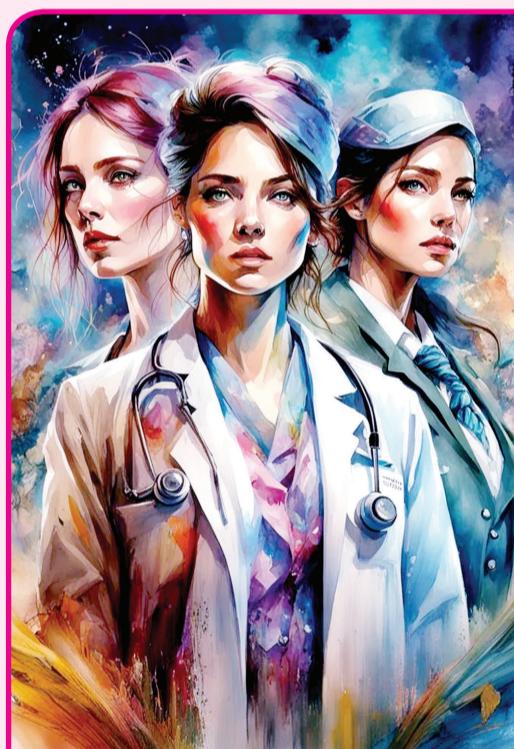
आईटी सेक्टर, ई-कॉमर्स, फ्रीलांसिंग और कैरेंट क्रिएशन जैसे क्षेत्रों ने महिलाओं को घर बैठे काम करने और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया है। यह सब इसी डिजिटल क्रांति से संभव हो पाया है। आज यूट्यूबर, ब्लॉगर, फ्रीलांसर, डिजिटल मॉक्टर, कोडर और ऑनलाइन टीचर के रूप में महिलाएं अपनी पहचान बना रही हैं।

उद्यगिता का नया अध्याय

महिला समानता के बदले महिलाओं का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज और राष्ट्र की प्रगति से जुड़ा हुआ है। आज 'स्टार्टअप इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' अभियानों ने महिलाओं को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर व्यापार खड़ा करने का मौका दिया। लाखों महिला उद्यमी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर अपने प्रोडक्ट बेच रही हैं और वैश्विक बाजार से जुड़ रही हैं।

आवाज और पहचान

हमेशा से अपनी राय और विचारों को दबा कर रखती आ रही आधी आवाजी को सोशल मीडिया ने अपनी राय और अनुभव संस्था करने का ऐसा मंच दिया, जो पहले असंभव था। #मीटू आंदोलन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जिसने दुनिया भर की महिलाओं को जोड़कर यैन उत्पीड़न के खिलाफ आवाज बुलाई।



समानता की राह में नई चुनौतियां

इसमें कई शक्ति की डिजिटल क्रांति के इस युग ने महिलाओं के लिए समानान्वयी के कई द्वारा खाल दिए हैं। आज विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएं अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं और नाम व पेसे दोनों कमा रही हैं। फिर भी इस राह में कुछ मुश्किलें भी हैं। जिन्हें समझना और दूर करना बहुत जरूरी है ताकि सभी महिलाओं को रोजगार और समानता का अवसर मिल सके...

डिजिटल गैर

आज जब हम सड़क पर चल रहे लगभग हर इंसान के हाथ में मोबाइल फोन देख सकते हैं, वहीं इसी देश में आज भी करोड़ों महिलाएं इंटरनेट और स्मार्टफोन की पहुंच से बचत हैं। जिसकी वजह से ग्रामीण और पिछड़े इलाकों की महिलाएं डिजिटल साक्षरता के अभाव में अवसरों से दूर रह जाती हैं।

नेतृत्व में कमी

तकनीकी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है, लेकिन उच्च पदों और नेतृत्व में उनकी संख्या अब भी कम है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट या बड़ी भारतीय आईटी कंपनियों में महिला सीईओ या बोर्ड सदस्य बहुत सीमित हैं।

डबल बड़न

घर से बाहर निकल काम पर जा रही महिलाएं अवसर डबल बड़न की शिकार होती हैं। यद्यपि नौकरी करने वाली महिलाएं आज भी घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारियों निभाती हैं। डिजिटल अवसरों के बावजूद असमान घेरेंगे बंदवारा उनके करियर की गति धीमी कर देता है।

डिजिटल युग और साइबर क्राइम: सबसे बड़ी चुनौती

कहते हैं कि सी भी चीज को बदलान से अभियाप में बदलते देर नहीं लगती। आज जहां डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं को ढेरों अवसर दिए हैं, वहीं इस प्लेटफॉर्म पर बढ़ते साइबर अपराध ने उनकी सुरक्षा और गरिमा पर नए खतरे खड़े किए हैं। जो कि उनकी सुरक्षा पर एक प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं।

ऑनलाइन उत्पीड़न और ट्रोलिंग

सोशल मीडिया पर स्क्रिप्ट महिलाओं को अक्सर अपमानजनक टिप्पणियां, धमकीयां और अश्वील संदेशों का सामना करना पड़ता है। यह उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर सीधा हमला है। इन सबकी वजह से महिलाओं को अनेकों परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

साइबर बुलिंग और मॉर्फिंग

कई मामलों में महिलाओं की तस्वीरें चुराकर उन्हें एडिट कर अश्वील सामग्री के रूप में फैलाया जाता है। यह मानसिक और सामाजिक हिक्का का रूप है। हम आए दिन इस तरह के समाचार पढ़ते हैं। कई बार बड़ी महिला शिक्षियों के भी जाली आई चिड़ियों आने की बात हम सुनते हैं।

वित्तीय धोखाधड़ी

महिलाओं को डिजिटल बैंकिंग और ऑनलाइन शॉपिंग के दौरान फिरिंग और हैकिंग का शिकार बनाया जाता है। कई बार ऐसा करने वाले जान-पहचान के लोग ही होते हैं।



रील और वायरल कल्पर

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बिना सहमति किसी महिला का वीडियो या फोटो वायरल करना, 'रील' बनाकर मज़ाक उड़ाना या चरित्रहन करना आज आम हो गया है। इन सब से महिलाओं के समक्ष अजीबोगरीब स्थिति बन जाती है।

गोपनीयता का संकट

अब किसी के बारे में जानकारी इकट्ठा करना बहुत आसान हो गया है। महिलाओं की व्यक्तिगत जानकारी, लोकेशन और चैट डेटा का लोक होना न केवल उनकी निजता का उल्लंघन है बल्कि उनकी सुरक्षा पर भी खतरा है।

तया है उपाय

- डिजिटल साक्षरता
विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े इलाकों की महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना आवश्यक है, ताकि वे तकनीक का सही उपयोग कर सकें और अपराधों से बच सकें।
 - साइबर सुरक्षा कानूनों का कड़ाई से पालन
ऑनलाइन अपराधियों को तुरंत सजा दिलाने की पारदर्शी प्रक्रिया महिलाओं का विश्वास मजबूत करेगी।
 - महिला नेतृत्व का विस्तार
तकनीकी और डिजिटल क्षेत्रों में अधिक महिलाओं को नेतृत्व स्तर तक पहुंचाना जरूरी है।
- परिवार और समाज का समर्थन**
- डिजिटल अवसरों का लाभ तभी मिल सकता है, जब समाज महिला की खतरतों को समान दे और उसे निर्णय लेने में बाबूली की महिला की अधिकार के लिए बहुत धीमी कर देता है।
 - डिजिटल युग ने महिला समानता को नई ऊँचाई दी है। अब महिला केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता और नियायिक भी बन रही है। हालांकि साइबर अपराध और असमान अवसर इस राह में बाधा है, परन्तु यदि हम तकनीकी सुरक्षा, जागरूकता और नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करें तो डिजिटल युग सचमुच महिलाएं द्वारा जरूरी है।
 - आगे वाले समय में वह दिन दूर नहीं जब डिजिटल क्रांति का नेतृत्व महिलाएं ही करेंगी और तभी यह युग अपने वार्तावाले अर्थों में "समानता का युग" कहलाएगा।



आधी दुनिया

म दर टेरेसा का मूल नाम एनेस गोंड्जा बोझाक्सु था, बीसवीं शताब्दी की एक प्रमुख मानवीय व्यक्तित्व के रूप में जानी जाती है। उनका जीवन गरीबी, दुख और मानवीय सेवा के प्रति समर्पण का प्रतीक है, जिसने वैश्विक स्तर पर लाखों लोगों को प्रेरित किया। 26 अगस्त 1910 को उस्कुप (वर्तमान

स्कोप्ज, उत्तरी मैसेडोनिया) में एक अल्बानियाई परिवार में जन्मी, एनेस का बचपन धार्मिक वातावरण में बीता। उनके पिता एक सफल व्यापारी थे, लेकिन उनकी असामिक मृत्यु ने परिवार को आर्थिक कठिनाइयों में डाल दिया।



डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ
विश्वविद्यालय

युवावस्था में, एनेस ने आयरलैंड की लोरेटो सिस्टर्स में शामिल होने का निर्णय लिया, जहाँ से वे 1929 में भारत पहुंचीं। कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में उन्होंने शिक्षिका के रूप में अपना करियर शुरू किया और 1944 तक सेट मैटी स्कूल की प्रधानाचार्य बनीं। इस अवधि में, वे गहन प्रार्थना और धार्मिक जीवन से जुड़ी रहीं, लेकिन 1946 में एक ट्रेन यात्रा के दौरान उन्हें एक आंतरिक "कॉल" प्राप्त हुई, जिसे उन्होंने "कॉल विदिन ए कॉल" कहा। यह वह क्षण था जब उन्होंने गरीबों, वीमारों और परित्यक्तों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का संकल्प लिया।

इस "कॉल" के पालन में, मदर टेरेसा ने 1948 में लोरेटो आंडर छोड़ दिया और कलकत्ता की झग्गी-झोपड़ीयों में काम करना शुरू किया। उन्होंने सफेद साड़ी में नीली बॉर्डर वाली वेशभूमा अपार्ना, जो बाद में उनकी पहचान बनी। 1950 में, विटिकन की अनुमति से उन्होंने मिशनरीज ऑफ चैरिटी की स्थापना की, जो एक धार्मिक संगठन था जो गरीबों की सेवा पर केंद्रित था। इस संगठन का उद्देश्य "सभसे गरीबों की मदद करना था। शुरूआत में, उन्होंने निलंबित गली में एक छोटा सा विलानिक खोला, जहाँ मरते हुए लोगों को आश्रय और देखभाल प्रदान की जाती थी। यह "निर्मल हृदय" नामक होम फॉर डाइंग था, जो अस्याय लोगों को गरिमापूर्ण मृत्यु प्रदान करने का प्रयास किया जाता था। संगठन का विस्तार तेजी से हुआ, 1960 तक यह भारत के विभिन्न हिस्सों में फैल गया, और 1965 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई। मदर टेरेसा के नेतृत्व में, मिशनरीज ऑफ चैरिटी ने लोगों पीड़ितों के लिए "शांति नगर" नामक कॉटोनी स्थापित की, जहाँ प्रभावित लोगों को चिकित्सा, आवास



और पुनर्वास प्रदान किया गया। उनके कार्यों का दायरा केवल भारत तक सीमित नहीं रहा। 1970 के दशक में, संगठन ने वेनेजुएला, रोम, तंजानिया और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में शाखाएँ खोलीं। 1980 तक, यह 610 से अधिक मिशनाओं में सक्रिय था, जिसमें अनाथालय, एडस रोगियों के लिए केंद्र और प्राकृतिक आपदाओं में राहत कार्य शामिल थे। मदर टेरेसा ने बांगलादेश युद्ध (1971) और भोपाल गैस त्रासदी (1984) जैसी घटनाओं में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके प्रयासों को

मदर टेरेसा: जीवन कार्य आलोचना और प्रासंगिकता

26 अगस्त जयंती पर

अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिली, 1962 में रामोन मैसेसे पुरस्कार, 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार और 1980 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। नोबेल पुरस्कार स्वीकार करते हुए, उन्होंने कहा कि यह सम्मान "गरीबों का सम्मान" है और पुरस्कार राशि को गरीबों की सेवा में उपयोग किया।

उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू उनकी अध्यात्मिक गहराई थी, वे दैनिक यूखरिस्ट और प्रार्थना से प्रेरणा लेती थीं, और उनका मानना था कि गरीबों में ईसा मसीह का दर्शन होता है।

दैनिक यूखरिस्ट एक ईसाई धार्मिक अनुष्ठान है, जो विशेष रूप से गेहूं के खालील और कुछ अन्य ईसाई समुदायों (जैसे एंगिलिकन और लूथरन) में प्रचलित है। इसे "होली कम्युनियन" या "मास" के रूप में भी जाना जाता है। यह अनुष्ठान विश्वासियों के लिए प्रेरणा स्रोत है और उनका मानना था कि यह अध्यात्मिक पोषण, ईश्वर के साथ एकता और पापों की क्षमा का साधन है।

मदर टेरेसा के संदर्भ में, दैनिक यूखरिस्ट उनके आध्यात्मिक जीवन का केंद्रीय हिस्सा था। वे प्रतिदिन गास में भाग लेती थीं और यूखरिस्ट ग्रहण करती थीं, जिससे उन्हें अपनी सेवा कार्यों के लिए शक्ति और प्रेरणा मिलती थी। उनके लिए, यह अनुष्ठान गरीबों में मसीह की उपस्थिति को देखने और उनकी सेवा करने का आधार था।

के अंतिम भोज (लास्ट सुपर) की स्मृति में रोटी और दाखमधु ग्रहण करते हैं, जो क्रमशः मसीह के शरीर और रक्त का प्रतीक माने जाते हैं।

कैथोलिक पंस्यार में, दैनिक यूखरिस्ट का अर्थ है कि यह अनुष्ठान प्रतिदिन आयोजित किया जाता है, आमतौर पर चर्च में मास के दैरान। इसमें प्रार्थना, पवित्रास्त्र का पाठ, उदाशें और रोटी-दाखमधु का अधिष्ठक शामिल होता है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह यीशु मसीह की वास्तविक उपस्थिति में परिचित हो जाता है। यह अनुष्ठान विश्वासियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। मिशनरीज ऑफ चैरिटी अज भी 130 से अधिक देशों में सक्रिय हैं, इसके लिए ग्रामीण और राजनीतिक देशों में उनकी विद्यालयों ने अपनी जाति जटिल बनाया है।

वर्तमान

प्रासंगिकता के संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा का महत्व उनकी मानवीय सेवा, निस्वार्थ समर्पण और गरीबों के बीच जीवन व्यतीत करना था, जो दुर्लभ है। कोई भी व्यक्ति ठीक उनकी तरह-झूँगियों में जीवन व्यतीत कर मरते हुए लोगों की सेवा भाव के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास्तविक व्यापार के साथ नहीं उभरा।

वर्तमान परिवृश्य में, 2025 के वैश्विक संदर्भ में, मदर टेरेसा की विशेष गरीबी उम्मलून के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़ती है। उनके जैसे कार्यकार्ता आज के सामाजिक व्यापार औंडेलनों में दिखते हैं, जहाँ गरीबों की आवाज उठाइ जाती है। क्या उनके कार्यकार्ता आज वास